ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय

पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)

फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादू

वर्षः 27 अंकः 24 बुलेटिन अवधिः 24 – 28 मार्च, 2018 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 23 मार्च, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान–नैनीताल				
	24–03–2018	25–03–2018	26–03–2018	27–03–2018	28–03–2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	18	18	19	20	20
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	5	6	6	6	7
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	80	80	80	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	40	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	006	006	006	008
वायु की दिशा	उत्तर–पूर्व	उत्तर–पूर्व	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (16 से 22 मार्च 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ कही–कही मध्यम बादल छाये रहने व लगभग 11.4 मिमी0 वर्षा हुई तथा अधिकतम तापमान 15.8 से 23.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 4.5 से 9.9 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

❖ गेहूँ की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा कीड़े एवं अन्य बीमारियों के प्रकोप हो रहा हो तो अनुमोदित कीटनाशियों का प्रयोग करें।

❖ मध्यम पर्वतीय क्षेत्रों में, मार्च–अप्रैल में सॉवा (मादिरा / झंगुरा) की प्रजातियों जैसे वी0एल0 मादिरा–172, वी0एल0 मादिरा–207 तथा पी0आर0जे01 की बुवाई पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25से0मी0 एवं पौधे से पौधे की दूरी 10से0मी0 पर करें। जिसमें 8–10कि0ग्रा0 / है0 बीज उपयुक्त होगा। नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश का 40:20:20 के अनुपात में

प्रयोग करें। जिसमें नत्रजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा का बुवाई के साथ प्रयोग करें। नत्रजन की शेष बची आधी मात्रा बुवाई के एक महीने बाद टॉप ड्रेसिंग के रूप में प्रयोग करें।

- झंगुरे की बुवाई के समय सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट उपलब्ध हो तो 100 क्विंटल/है0 या 2 क्विंटल प्रति नाली की दर से खेत में अच्छी तरह मिला दें। यदि कम्पोस्ट उपलब्ध न हो तो वर्मीकम्पोस्ट 50 क्विंटल/है0 या 1 क्विंटल प्रति नाली की दर से प्रयोग करें।
- खरपतवार के नियंत्रण हेतु बुवाई के 20–25 दिन बाद 650ग्राम 2,4 डी0 सोडियम साल्ट 500लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- सावा के बीज को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/कि0ग्रा0 बीज की दर से बुवाई से पूर्व उपचारित करें।
- गेहूँ की फसल मे निचली पत्तियो पर पीले रंग के फफोले दिखाई देने पर या पत्तियो पर भूरे धब्बे या नोक से पत्तियो के पीले पड़कर मुरझाने पर प्रोपीकोनाजोल 25 ई0 सी0 का 1 लीटर/हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

उद्यानप्रबन्धः

- आगामी माह में सब्जियों की बुवाई एवं प्रतिरोपण हेतु खेतों की तैयारी करें।
- घाटी क्षेत्रों में टमाटर, शिमलामिर्च तथा बैंगन की तैयार पौध का रोपण 60 से 60 से0मी0 दूरी पर इस माह के द्वितीय पखवाड़े में करें।
- सीमित सिंचाई वाले क्षेत्रों के लिए शिमलामिर्च, टमाटर, बैंगन एवं मिर्च बीजों की बुवाई पौधशाला में करें।
- टमाटर व मिर्च की फसल मे रोपाई करने से पूर्व जड़ो को एमिडाक्लोरपिड 1 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर 10–15 मिनट तक डुबाने के बाद रोपाई करे।
- टमाटर व मिर्च की फसल मे अगेती रोपी गई फसल में सिकुड़े हुए चित्तकबरे पत्ते दिखाई देने पर ग्रसित पौधो को निकालकर नष्ट करे। तथा रस चूसने वाले कीड़ो के नियत्रंण हेतु सर्वागीं कीटनाशी का छिड़काव करें।
- फ्रासबीन और मटर की फसल में तनो पर सफेद रूई जैसी बढ़वार दिखाई देने पर ग्रसित हिस्से/पौधो को निकालकर नष्ट कर दें तथा कार्बडाजिन 1 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मटर में पौधों की सूखने एवं निचली पत्तियां पीले पड़ने की अवस्था में कार्बन्डाजिम 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ों की सिंचाई करें ।
- प्याज और लहसुन की पत्तियॉ उपर से पीली पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल या टेबूकोनाजोल का 1 मिली0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- गोभीवर्गीय सब्जियो में पत्तीधब्बा रोग के नियत्रंण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ऊॅचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रो में जहॉ गोबर और अन्य उर्वरक पहले डाल दिये गये थे, नत्रजन की शेष आधी मात्रा का प्रयोग करे।
- बगीचो में मधुमक्खियो से भरे बक्सों का प्रबन्ध लगभग 2–3 बक्से/एकड़ के हिसाब से करे।
- कीड़ो एवं रोगों के निराकरण हेतु बगीचो मे फूल आते समय नियंत्रक दवाईयों का प्रयोग कतई न करें। इससे मधुमक्खियों के मरने का डर रहता है।

पशुपालनप्रबन्धः

- गर्भवती पशुओ में प्यूरपरल बुखार को रोकने के लिए, प्रतिदिन 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण को पशुओं की प्रतिरक्षा को बढ़ाने हेतु आहार के रूप में दें।
- इस महीने में पानी से होने वाली बीमारी की रोकथाम के उपाय करें।
- पशुओं में मच्छरों, मक्खियों टिक्स आदि से होने वाली बीमारी के लिए सावधानी बरतें।
- इस समय पशुओं में बॉझपन और जोहन की बीमारी होने की अधिक संम्भावना है। इस स्थिति में पशुओ का तत्काल इलाज करवाए।
- पशुओं के बैठने का स्थान समतल होना चाहिए जिससे उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें।
- जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें।

- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सो कैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान–नवजात को बदबूदार दस्त होना और इस का रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15 सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

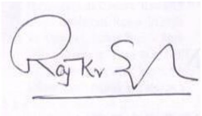

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो. ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर